कृष्णपाल गूर्जर और विपुल गोयल की लड़ाई...

पेज एक का शेष

के लिए बोली जाती हैं। कंजूसी के लिए मशहूर कृष्णपाल गूर्जर ऐसे लोगों को बिना चंदा दिए वापस नहीं भेजता है। इतना ही नहीं कुछ लोग तो पूर्व सांसद और मौजूदा भाजपा विधायक (मीरापुर) अवतार सिंह भड़ाना से भी गूर्जर को गाली देकर चंदा ले आते हैं या दावत उड़ाते हैं। भड़ाना दरअसल फरीदाबाद से फिर से सांसद बनने का ख्वाब देख रहा है। वह बड़ा दांव खेलने के चक्कर में है। उसकी नजर कांग्रेस टिकट पर है और वह गूर्जर के मुकाबले मैदान में उतर सकता है। इसीलिए इस समय वह गूर्जर विरोधी खेमे से जबरदस्त दोस्ती निभा रहा है। दशहरा मैदान के आयोजन में दोनों गुटों ने इन सारे नेताओं से पैसे की मोटी उगाही चंदे के रूप में की है।

मुख्यमंत्री की भूमिका

मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर को गूर्जर और विपुल गोयल की लड़ाई की पूरी जानकारी है। लेकिन मुख्यमंत्री को इस लड़ाई में अलग मजा आ रहा है। मुख्यमंत्री की खास सीमा त्रिखा केंद्रीय मंत्री गूर्जर की ओर से बैलेंस बनाए रखती है, अन्यथा विपुल गोयल ने सीएम से गूर्जर के खिलाफ शिकायत का कोई मौका नहीं छोड़ा है। खट्टर ने गूर्जर को सीधा रखने के लिए विपुल गोयल को थपकी दे रखी है। फरीदाबाद के अफसरों को आदेश है कि गोयल के काम रुकने नहीं चाहिए। अफसरों को मौका मिला है तो वे दोनों नेताओं के दलालों को अपने यहां शरण देते हैं और पैसा लेने के बाद ही काम करते हैं। गूर्जर का पुत्र नगर निगम का सीनियर डिप्टी मेयर है तो नगर निगम के अफसर सामानों की खरीदारी और बाकी टेंडरों में चाहे जो करें, गूर्जर पुत्र की जबान नहीं खुलती। अफसर इसे रिश्वत की मौन स्वीकृति समझते हैं। इसलिए दोनों गुटों का धंधा अपने-अपने ढंग से चल रहा है और अफसर व दलालों के मजे हैं।

जनता क्या करे

फरीदाबाद की जनता भाजपा के नेताओं का तमाशा सरेआम देखने के बावजूद चुप है। शहर या गांवों में कोई काम नहीं हो रहे हैं। हर गांव में दो गुट बन गए हैं, दोनों लड़ते हैं और सुबह गूर्जर और गोयल से फोन कराए जाते हैं। कुल मिलाकर दोनों की यही राजनीति रहती है। गूर्जर ने अपनी संकल्प यात्रा में दुनिया भर की उपलब्धियां गिनाईं। उसका बेटा शहर का सीनियर डिप्टी मेयर है। लेकिन फरीदाबाद के किसी संगठन या राजनीतिक दल ने इन बाप-बेटों से जवाब तलब किया कि शहर की सड़कों की हालत खस्ता क्यों है, शहर में कूड़े के ढेर क्यों लगे हुए हैं, स्ट्रीट लाइटें क्यों बंद पड़ी हैं...विपुल गोयल से फरीदाबाद शहर के लोग कभी यह पूछने गए कि सिवाय चंदा देने के अलावा गोयल के पास अपनी क्या उपलब्धियां हैं...सीमा त्रिखा से तो कोई सवाल ही नहीं पूछ सकता, जो महिला विधायक शराब का ठेका तक न हटवा सके वह अपनी उपलब्धियां कैसे बता सकती है...जनता खुद सोचे कि उसने कैसे नेताओं को वोट दिया था और वो क्या कर रहे हैं...शहर में एक भी प्रभावी आंदोलन इन नाकारा नेताओं के खिलाफ आजतक किसी संगठन ने नहीं छेड़ा।

मोदी सरकार की छत्रछाया में एक और अंबानी-बैंक भ्रष्ट गठबंधन सामने आया

मज़दूर मोर्चा विशेष

एसबीआई की पूर्व चेयरमैन अरुंधति भट्टाचार्य अब मुकेश अंबानी के रिलायंस इंडस्ट्रीज में 5 साल के लिए एडिशनल डायरेक्टर हो गयी है। भट्टाचार्य के कार्यकाल मे ही रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) के साथ जियो पेमेंट्स बैंक एसबीआई के साथ ज्वाइंट वेंचर में एक्टिव पार्टनर बन गया था।

जियो पेमेंट बैंक में एसबीआई की सिर्फ 30 फीसदी हिस्सेदारी दी गयी जबकि 70 फीसदी हिस्सेदारी रिलायंस इंडस्ट्रीज को दे दी गयी थी। गजब की बात तो यह है कि जियो पेमेंट बैंक लिमिटेड को नोटबंदी के ठीक दो दिन बाद ही 10 नवंबर 2016 को आधिकारिक तौर पर निगमित किया गया था। इस समय मार्केट में मिल रहे तगड़े कॉम्पिटिशन के बावजूद एसबीआई का पेमेंट स्पेस में 30 प्रतिशत मार्केट शेयर है। एक तरह से थाली में सजाकर एसबीआई के कस्टमर को जिओ को परोस दिया गया था, यह कमाल अरुंधति भट्टाचार्य जी ने ही किया था।

अरुंधति मैडम द्वारा जियो पेमेंट बैंक को एसबीआई के बड़े नेटवर्क का फायदा जो दिलवाया गया उस अहसान को आज मुकेश अम्बानी ने चुका दिया है। यह बिल्कुल इस हाथ ले और उस हाथ दे वाला मामला है।

कुछ समय पहले सिर्फ कागजों में बन रहे जिओ इंस्टिट्यूट को इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस का दर्जा मानव संसाधन मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने दिया था। उसके पीछे की असली वजह यह थी कि जिन्होंने %इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस% की नीति बनाई थी वह विनय शील ओबरॉय जी मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उच्च शिक्षा विभाग में मार्च 2016 में एचआरडी सेक्रटरी थे और वही रिटायरमेंट के तुरंत बाद रिलायंस में एजुकेशन के क्षेत्र में एडवाइजर के पद पर जॉइन हो गए थे ओर उन्होंने ही पूरा प्रजेंटेशन तैयार करवाया था। इतना खुले आम भ्रष्टाचार हो रहा है लेकिन मजाल है कि गोदी में बैठा हुआ मीडिया इसके खिलाफ तो छोड़िए, इस बात को ढंग से रिपोर्ट कर देना तक जरूरी नही समझ रहा है।

सुधी पाठकों से अपील

31 वर्षों से 'मज़दूर मोर्चा' वैकल्पिक मीडिया के तौर पर अपने सुधी पाठकों को वह समाचार, विचार एवं जन उपयोगी सामग्री प्रस्तुत करता आ रहा है जिसे अन्य मीडिया छिपाने का प्रयास करता है। सुधी पाठक इतना तो समझ ही गये होंगे कि यह छोटा सा अखबार किसी भी राजनीतिक अथवा व्यवसायिक धड़े से जुड़ा नहीं है। जनहित में जो भी प्रकाशित करने लायक सामग्री हो पाती है उसे लोग़ों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाता है।

बिना विज्ञापनों के, केवल पाठकों के सहयोग से चलने वाला यह छोटा सा अखबार आपको और अधिक बेहतर व निरंतर सेवा देता रहे इसके लिये आप से निवेदन है कि इसमें अपना आर्थिक सहयोग अवश्य प्रदान करें। 'मज़दूर मोर्चा' नियमित रूप से खरीदकर पढ़ने वाले पाठक तो अपना योगदान दे ही रहे हैं, इलेक्ट्रोनिक माध्यम से अखबार पढ़ने वाले पाठकों से विशेष अनुरोध है कि वे भी इसमें अपना आर्थिक सहयोग प्रदान करें। वार्षिक सहयोग के तौर पर 100,500 रुपये 1000 रुपये की धनराशि सामर्थ्य अनुसार 'मज़दूर मोर्चा' के निम्नलिखित खाते में डाले जा सकते हैं।

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी भी शाखा में खाता संख्या 451102010004150

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5
2. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड
3. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
4. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे
5. राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने
6. हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास
7. जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207

गतांक की चीर-फ़ाड़

डॉ. जुगल किशोर गुप्ता

धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है इसमें किसी दूसरे का दखल नहीं होना चाहिए

मज़दूर मोर्चा के 14-20 अक्तूबर 2018 के अंक में राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक मुद्दों पर अनेक महत्वपूर्ण समाचार प्रकाशित हुए हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इवेंट मैनेजमैंट में माहिर हैं। जहां भी वह रैली या सभा करते हैं वहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के कार्यकर्ता व मोदी भक्त मोदी जी की छवि बनाये रखने के लिये काफ़ी तादाद में पहुंचाए जाते हैं और वे वहां 'मोदी मोदी' के नारे लगाते हैं, जिससे जनता में संदेश जाए कि मोदी जी अभी लोकप्रिय हैं। परंतु किसानों के मसीहा चौधरी छोटू राम की जयंति के मौके पर सांपला में आयोजित रैली से 'चुनाव 2019: हरियाणा में सिंगल व लोक सभा में डबल डिजिट में सिमट जायेगी भाजपा पीएम मोदी की रैली में जबरदस्त हूटिंग-हज़ारों नौजवानों ने मोदी-गो बैंक के नारे लगाकर भाषण में डाला व्यवधान' में मोदी जी की लोकप्रियता की असलियत का विवेचन किया गया है। सरकार व पुलिस तथा गुप्तचर एजेंसियों के सचेत रहने के बावजूद हज़ारों की संख्या में हुड़दंगी मंच के करीब पहुंच कर मोदी जी के भाषण के दौरान 'मोदी-गो बैक' नारे लगाते रहे जिससे मोदी जी असहज तो हो गये मगर अपना भाषण जारी रखा। मोदी जी ने चौधरी छोटू राम को जाटों का मसीहा कहा तो विरोध होने पर बाद में उन्हें सभी जातियों का मसीहा बताया।

अमरीकी राष्ट्रपति ट्रंप और प्रधानमंत्री दोनों एक जैसे नस्ली राष्ट्रवादी प्रशंसक हैं। ट्रंप के अहंकार व अक्खड़पन के कारण कड़वाहट और अपमान भरे वातावरण में ट्रंप के काफ़ी सहयोगी उनका प्रशासन छोड़ गए हैं, जिनमें प्रमुख हैं-ट्रंप का चुनाव प्रमुख मैनाफोर्ट, राष्ट्रसंघ में अमरीकी राजदूत निक्की हली आदि। रक्षा मंत्री जिम मैटिस भी छोड़ने के कगार पर है। मोदी सरकार के विदेशों से बुलाए गए कई आर्थिक सलाहकार भी एक-एक कर वापिस चले गये हैं।

अमेरिका में एफ़बीआई के डायरेक्टर कोमी को ट्रंप ने और भारत में रिजर्व बैंक इंडिया के नामी गवर्नर रघुराम राजन को मोदी ने चलता किया। ट्रंप व मोदी दोनों झूठ व भ्रामक तथ्य बोलने में कोई झिझक नहीं करते और दोनों की कैबिनेट में स्तरहीन व्यक्तियों की भरमार है तथा दोनों के कृपापात्र व सलाहकार चुपचाप निकल रहे हैं, जिसकी 'डूबते जहाज हैं ट्रंप और मोदी' में समीक्षा की गई है।

धर्म व्यक्ति का व्यक्तिगत मामला है इसमें किसी दूसरे का दखल नहीं होना चाहिए और धर्म को राजनीति से अलग रखना चाहिये क्योंकि यह सबको मिल-जुलकर एक साथ एक जगह काम नहीं करने देता। यदि धर्म को अलग कर दिया जाय तो राजनीति पर सब इकट्ठा हो सकते हैं। परंतु राजनीति हमें धर्म, जाति व क्षेत्रवाद के नाम पर लगातार बांट रही है, उनका असली मकसद वोट जुटाना होता है। स्कूलों द्वारा बच्चों को समानता व राष्ट्रीय एकता की शिक्षा दी जाती है। अगर कक्षाओं को धर्म के आधार पर बांट लिया जाय और बचपन में ही भेदभाव के बीज बो दिए जाए तो शिक्षा का मूल्य क्या रह जाएगा? 'स्कूलों की कक्षा भी बंट जाय हिन्दू-मुसलमान में, क्या बचेगा हिन्दुस्तान में' में उत्तरी दिल्ली नगर निगम के वजीराबाद गांव में एक स्कूल के प्रिंसिपल द्वारा हिन्दू और मुसलमान छात्रों को अलग-अलग सेक्शन में बांटने, जासूसी के आरोप में गिरफ़्तार सीनियर इंजिनियर निशांत अग्रवाल तथा केन्द्रीय विदेश राज्यमंत्री एमजे अकबर पर यौन शोषण के आरोप के संदर्भ में धर्म और राजनीति के घालमेल का सटीक विश्लेषण किया गया है।

'मी टू' मुहिम विदेशों से शुरू हुई और अब यह भारत में भी खलबली मच रही है। इसके जरिए फ़िल्म, पत्रकारिता, स्पोर्ट्स, राजनीति और अन्य क्षेत्रों में कार्यरत महिलाओं ने अपने साथ हुये यौन शोषण के हादसे का खुलासा किया और दोषी व्यक्ति को सज़ा देने की मांग की। यह ऐसा मौका है जब यौन शोषण से पीड़ित महिलायें अपने दिल की बात बोल रही हैं जो वह सालों से नहीं बोल पाई थी। एक के बोलने से हिम्मत आई और बाकी ने भी बोलना शुरू कर दिया और यह एक मुहिम बन गई। यह मुहीम तब शुरू हुई जब फ़िल्म अभिनेत्री तनुश्री दत्ता न अभिनेता नाना पाटेकर पर यौन शोषण का आरोप लगाया। इसके बाद संस्कारी बाबू अभिनेता आलोकनाथ तथा फ़िल्मी जगत के अन्य बड़े लोग़ों पर आरोप लगे। बीसीसीआई के सीईओ राहुल जोहरी तथा एनएसयूआई के अध्यक्ष फिरोज खान पर भी आरोप लगे। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के बड़े रूख के कारण फ़िरोज खान ने इस्तीफ़ा दे दिया तथा बीसीसीआई के निर्देश पर राहुल जोहरी को आईसीसी की बैठक में जाने से रोक दिया गया।

'मि टू' अभियान में पत्रकार प्रिया रमानी ने अपने ट्वीट में तत्कालीन संपादक व वर्तमान केंद्रीय विदेश राज्य मंत्री एम.जे. अकबर द्वारा महिला पत्रकारों के साथ यौन शोषण के बारे में लिखा तो इसके बाद अन्य महिला पत्रकारों ने भी अपने साथ हुये यौन शोषण के बारे में लिखा। 'भाजपा के केन्द्रीय मंत्री इंटरव्यू के बाद शराब और हम बिस्तर होने का बनाते थे दबाव' में एम.जे. अक्बर, हिंदुस्तान टाइम्स के ब्यूरो चीफ़ व पोलिटिक्स एडिटर प्रशांत झा, टाइम्स ऑफ़ इंडिया के रेजिडेंट एडिटर केआर श्री निवास, प्रख्यात लेखक चेतन भगत, कॉमेडियन उत्सव चक्रवर्ती, कलाकार रजत कपूर, नाना पाटेकर, आलोक नाथ आदि द्वारा महिलाओं के यौन शोषण का रहस्योद्घाटन किया गया है। पत्रकार गजाला वहाब ने ''दी वायर'' कहानी के जरिए जो 'एक और महिला पत्रकार ने सुनाई संपादक अकबर की ''डर्टी ट्रिक्स'' की दास्तान, कहा-'टार्चर चैंबर बन गया था दफ़्तर' गजाला बहाव के यौन उत्पीड़न व मानसिक यातना का कच्चा चिट्ठा खोला गया है। हालांकि इस लड़ाई में सिलेब्रिटिज ही खुलकर बातें कर रही हैं लेकिन मध्य वर्ग की महिलाओं में भी आशा की किरण जगी है।

प्रिया रमानी के अलावा अकबर के यौन शोषण की शिकार अन्य महिला पत्रकारों की संख्या बढ़कर 20 तक पहुंच गई है। अकबर ने प्रिया रमानी पर आपराधिक मानहानी का मुकदमा दायर कर दिया है और इसके जवाब में एशियन एज के तत्कालीन कई पुरूष पत्रकार महिला पत्रकारों के पक्ष में गवाही देने के लिये सामने आ गये हैं। आश्चर्य है कि बेटी बचाओ बेटी पढाओ तथा नारी सशक्तिकरण का नारा देने तथा नैतिकता की दुहाई देने वाली मोदी सरकार अपने मंत्री के विरुद्ध कार्यवाही करने से हिचक रही थी, इसलिये सरकार को विपक्ष तथा कुछ अपने सहयोगियों के विरोध का सामना करना पड़ रहा था। परंतु जब मोदी सरकार तथा स्वयं प्रधानमंत्री मोदी की छवि व लोकप्रियता सवालों के घेरे में आयी और यह चुनावी मुद्दा बनने लगा तो मोदी जी ने मजबूर होकर अकबर से त्याग पत्र लिया।

मोदी सरकार के सत्ता में आने के बाद साढे चार साल के कार्यकाल में बलात्कार, गौ-हत्या व गौ-रक्षा को राजनीतिक रूप देने के लिये धार्मिक पृष्ठभूमि को उभारा जाता है ताकि उसके बहाने भीड़ एक समुदाय पर टुट पड़े। आरोपी मुसलमान है तो हंगामा लेकिन आरोपी हिन्दू है और पीड़ित दलित तो चुप्पी। यही काम जाति के स्तर पर भी हो रहा है। गुजरात में चौदह महीने की ठाकोर समाज की एक बच्ची के साथ बिहार के एक युवक द्वारा बलात्कार की घटना के संदर्भ में 'गुजरात की भीड़ से भागते यूपी बिहार के लोग, यूपी बिहार की भीड़ से कहां-कहां भगे लोग???' में गुजरात से पलायन को मजबूर यूपी और बिहार के लोग़ों की दुर्दशा की समीक्षा की गई है।

हरियाणा के चौटाला खानदान में चौधरी देवीलाल की पार्टी 'इंडियन नेशनल लोक दल' में औम प्रकाश चौटाला के बेटों अजय व अभय के बीच विरासत के लिये संघर्ष हो रहा है, जिसका 'चौटाला खानदान में जूतम पैजार....यानी विरासत के लिये नूरा कश्ती-जिस पार्टी को देवी लाल ने संघर्ष से खड़ा किया आज उस पार्टी को अपनी-अपनी राजनीति के लिये खत्म किया जा रहा है' में खुलासा किया गया है। यह कोई नई घटना नहीं है, इतिहास दोहरा रहा है। जब देवी लाल जिंदा थे तब देवी लाल के बेटों औम प्रकाश चौटाला, प्रताप सिंह व रणजीत सिंह में विरासत के लिये संघर्ष हुआ था तब औम प्रकाश ने बाजी मारी थी।

पेट्रोल की बढ़ती कीमतों के संदर्भ में योग व्यवसायी रामदेव ने कहा था कि यदि सरकार उसे पेट्रोल पम्प दे और टैक्स न लगाए तो वह तेल आधे दाम पर बेचेगा पर 'पेट्रौल पंप पर जाकर शीर्षासन लगायें 90 रुपये वाला पेट्रोल 06 रुपये हो जायेगा: रामदेव सांपला में प्रधानमंत्री मोदी के भाषण के दौरान नौजवानों द्वारा मोदी के विरुद्ध नारे लगाने पर 'फेंकते रहो जुमले, सुन कौन रहा है!' तथा यूपी और बिहार के लोग़ों को गुजरात से भागने के लिये मजबूर करने पर 'गुजरात से भागते यूपी और बिहार के लोग भारत-पाक विभाजन 1947 याद आ गया' कार्टूनों द्वारा उपयुक्त कटाक्ष किया गया है।